MALUKA IAS

प्राचीन भारत का इतिहास

पाषाण युग

पुरापाषाण काल

पूर्व / निम्न-पुरापाषाण काल	मध्य पुरापाषाण काल	उच्च पैलियोलिथिक आयु
समय अवधि 10 लाख ईसा पूर्व से 1 लाख ईसा पूर्व तक।	1 लाख - 23,000 ई.पू	23000 ईसा पूर्व से 10000 ईसा पूर्व
यह चरण हिमयुग के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करता है।	होमो इरेक्टस विकसित अवस्था में पहुंच गया और मनुष्य को होमो सेपियन पुरातन (सोचने वाले पुरुष) के रूप में जाना जाता है	इस अवधि के दौरान आधुनिक मानवों को होमो सेपियन सेपियन के रूप में जाना जाता था और नर्मदा घाटी में पहले आधुनिक व्यक्ति की खोज की गई थी।
भूवैज्ञानिक रूप से इस चरण को प्लेइस्टोसिन काल के रूप में जाना जाता है (इस युग के दौरान पृथ्वी पर बर्फ पिघलने लगी थी)	महाराष्ट्र में नेवासा इस युग का प्रकार है।	पत्थर के औजारों के साथ-साथ ऊपरी पुरापाषाण काल के मानवों ने बड़े पैमाने पर हड्डी के औजारों का इस्तेमाल किया और उन्हें आंध्र प्रदेश में कुरनूल गुफाओं और मच ताला चिंता गुफाओं से खोजा गया है।
इस युग के दौरान होमिनिड (मानवों की तरह प्रजाति) का उदय हुआ।		विलास रंगम की गुफाओं से 200 हड्डियों की खोज की गई है।
सबसे प्राचीन मानव को होमो इरेक्टस (पूरी तरह से खड़ी मुद्रा वाला मनुष्य) के रूप में जाना जाता है। इसका प्रमाण नर्मदा घाटी से प्राप्त हुआ है।		यूपी में बेलन घाटी में मिली एक अस्थि देवी।
उपकरण- इस युग के उपकरण कोर की तकनीक पर आधारित थे। इस तकनीक में बाहरी परत को हटाने के लिए एक पत्थर को दूसरे पत्थर से मारा जाता था और फिर पत्थर के अंदरूनी हिस्से को उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।		हड्डी के उपकरण ज्यादातर विभिन्न जानवरों के एंटेलर्स हॉर्न्स, आइवरी और बोन्स से बने होते थे।
इस युग के औजारों को कंकड़ उपकरण कहा जाता है।		ऊपरी पुरापाषाण काल के मानवों ने चित्रकला और उत्कीर्णन में भी रुचि ली।
मानवों ने उपकरण बनाने के लिए क्वारिटजाइट पत्थरों का इस्तेमाल किया।		महाराष्ट्र के पाटने से एक शुतुरमुर्ग के अंडे के खोल पर क्रॉस लाइन मिली है।
औजारों का नाम- हस्त कुल्हाड़ी। क्लीवर चॉपर चॉपिंग		

सबसे पुराना पत्थर का औजार महाराष्ट्र के बोरी से खोजा गया था।		
इस युग के औजार सबसे अधिक संख्या में सोहन घाटी से खोजे गए हैं और इसे सोहन घाटी संस्कृति के रूप में भी जाना जाता है।		
इस युग के उपकरण गंगा घाटी को छोड़कर पूरे भारत से खोजे गए थे।		
प्रारंभिक मानव को पेंटिंग में दिलचस्पी थी और पहले की पेंटिंग ने भीमबेटका पेंटिंग की खोज की थी।		
इस पेंटिंग में कई पक्षियों, जानवरों और शिकार के दृश्यों को चित्रित किया गया है जो दर्शाता है कि वे शुरुआती मानवों के लिए जाने जाते थे और शायद भोजन के उद्देश्य से शिकार किए जाते थे।		
लाल, सफेद, पीले और हरे रंग इस्तेमाल किए गए थे।		
भीमबेटका के अधिकांश चित्र मध्यपाषाण काल के हैं।		
भारत में सबसे बड़ा प्रागैतिहासिक स्थल तमिलनाडु में आदिचन्नल्लूर है।		
अत्तिरामपकम मद्रासियन पंथ का सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।		
भीमबेटका गुफा की खोज से संकेत मिलता है कि निचले पुरापाषाण काल के पुरुष कृत्रिम निवास का उपयोग करने के लिए जागरूक थे।		

<u>मध्यपाषाण काल (10,000-7,000 ईसा पूर्व)</u>

- समयावधि - (10,000-7,000)
- लगभग 10000 ईसा पूर्व प्लीस्टोसिन काल समाप्त हो गया और होलोसीन युग शुरू हुआ।
- इस युग में तेज, गर्म, शुष्क हवाओं के बहने की विशेषता थी।
- इस वजह से, कई जलाशय और झीलें सूख गईं और वनस्पति के विकास के लिए भूमि को साफ कर दिया गया।
- तुलनात्मक रूप से गर्म जलवायु जीवन के लिए अधिक उपयुक्त थी और इस वजह से जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई।
- कुछ क्षेत्रों में जलाशयों के सूखने से मानवों को उन क्षेत्रों में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा जहां ऐसे संसाधन अभी भी उपलब्ध थे।
- तापमान में वृद्धि के कारण बर्फ पिघलने लगी और इस वजह से समुद्र का स्तर बढ़ गया जिससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ आ गई। इसने आबादी को अन्य स्थानों पर पलायन करने के लिए मजबूर किया।
- इन कारकों के संयुक्त प्रभाव के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- जनसंख्या में वृद्धि ने भोजन की आवश्यकता और संसाधनों की उपलब्धता के बीच संतुलन बिगाड़ दिया।

- शिकार और भोजन संग्रह अब भोजन की जरूरतों को पूरा नहीं कर सका और इस वजह से आदमी को जानवरों को पालतू बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- वनस्पति की उपलब्धता से इसे और सुगम बनाया गया और इस तरह देहाती जीवन शुरू हुआ जो मेसोलिथिक काल की विशेषता थी।
- जनसंख्या घनत्व में वृद्धि के कारण समूह का निर्माण हुआ और इसने सामुदायिक जीवन की शुरुआत को चिह्नित किया।
- इस युग के औजारों को माइक्रोलिथ कहा जाता है, क्योंकि ये उपकरण आकार में बहुत छोटे थे, लंबाई में लगभग 5 सेमी।
- यह युग अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति से जुड़ा है।
- मनुष्य को आग का ज्ञान हो गया और इस वजह से भोजन अब कच्चे रूप में नहीं खाया जाता था।
- पुरुष भी प्रक्षेप्य की तकनीक से परिचित हुए।
- धनुष-बाण का भी प्रयोग किया जाता था।
- अधिकांश "भीमबेटका" चित्रकला इसी युग की है।
- पेंटिंग भीमबेटका (एमपी), आदमगढ़, प्रतापगढ़ और मिर्जापुर से मिली है।
- मध्य प्रदेश के आदमगढ़ और राजस्थान के बागोर से पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण मिला है।
- <u>बागोर सबसे बड़ा मध्यपाषाण स्थल भी है।</u>
- बागोर से झोपड़ियों के प्रमाण मिले हैं। इस झोंपड़ी का फर्श पत्थर के स्लैब और घास के पर्दों से तैयार किया गया था।

- इस युग के दौरान कुछ प्रकार के धार्मिक विचार भी विकसित हुए क्योंकि उत्तर प्रदेश में सराय नाहर राय और महादहा से ठीक से दफन किए गए कई कंकाल मिले हैं।
- सराय नाहर राय से युद्ध के सबसे पुराने प्रमाण मिले हैं।
- महाडा से पोस्ट-होल्स खोजे गए हैं।
- महाराष्ट्र में पाटना से सबसे अधिक माइक्रोलिथ की खोज की गई है।

<u>नवपाषाण चरण (7,000 ईसा पूर्व- आगे)</u>

- यह युग भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 7,000 ईसा पूर्व शुरू हुआ लेकिन सभी भागों में इस युग की शुरुआत एक ही समय में नहीं हुई।
- इस समय तक जलवायु में और सुधार हो चुका था और इस वजह से जनसंख्या घनत्व में काफी वृद्धि हुई थी। इसने फिर से मानवीय जरूरतों और भोजन की आवश्यकता और संसाधनों की उपलब्धता के बीच ठीक संतुलन को बिगाड़ दिया। पशुचारण और शिकार गतिविधियों पर जीवन निर्वाह करना अब संभव नहीं था और इसलिए खाद्य सामग्री की बढ़ती आवश्यकता के कारण, मनुष्य को कृषि करने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- कृषि की शुरुआत के परिणामस्वरूप कई अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।
- अब तक मनुष्य एक गतिशील जीवन व्यतीत कर रहा था, लेकिन एक गतिहीन जीवन की शुरुआत हुई और समय के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में कई ग्रामीण बस्तियों का उदय हुआ।
- इस युग के दौरान मनुष्य ने पशु शक्ति का उपयोग सीखा था और पशु का उपयोग गतिशीलता के लिए किया गया था।
- खाद्यान्न के उत्पादन ने भंडारण की समस्या पैदा कर दी और इस वजह से मिट्टी के बर्तनों का निर्माण किया गया।
- मिट्टी के बर्तनों का सबसे पहला प्रमाण उत्तर प्रदेश के चोपानी मांडू से मिलता है। शुरुआत में बर्तन हाथ से बने होते थे लेकिन बाद में पहिये का आविष्कार हुआ और पहिया से बने मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल होने लगा।
- पहिया के आविष्कार के परिणामस्वरूप कई उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। मनुष्य ने पहिये का उपयोग गाड़ियाँ बनाने के लिए किया और जो गतिशीलता को कई गुना बढ़ा देता है।
- अब तक क्वार्टजाइट पत्थरों का उपयोग किया जाता था लेकिन अब इसे छोड़ दिया गया और मानवों ने आग्नेय चट्टानों जैसे बेसाल्ट, डोलोमाइट आदि का उपयोग करना शुरू कर दिया।
- इस युग के उपकरण पीसने और चमकाने की तकनीक पर आधारित थे।
- पूर्वी भारत और कश्मीर घाटी को शुद्ध नवपाषाण स्थल माना जाता है।
- भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में नवपाषाण काल।

<u>A) उत्तर-पश्चिमी भाग</u>

- इस क्षेत्र में नवपाषाण युग लगभग 7000 ईसा पूर्व शुरू हुआ।

- उत्तरी बलूचिस्तान में बोलन नदी के तट पर स्थित "मेहरगढ़" सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।
- मेहरगढ़ के लोग गेहूं, जौ, कपास का उत्पादन करते हैं।
- मेहरगढ़ के लोग कपास के शुरुआती उत्पादक थे।
- कृषि गतिविधियों के साथ-साथ भेड़ और बकरी जैसे जानवरों को पालतू बनाना भी किया जाता था।
- इस क्षेत्र के लोगों ने एक विशिष्ट दफन प्रथा का पालन किया जिसमें शवों को एक गड्ढे में रखा गया था और कुछ कब्रों से बकरियों के कंकाल भी मिले हैं।

बेलन घाटी

- नवपाषाण युग लगभग 7500 ईसा पूर्व शुरू हुआ।
- कोल्डिह्वा के लोग चावल के शुरुआती उत्पादक थे। वे चावल की जंगली और खेती योग्य किस्मों का उत्पादन करते हैं।
- चोपनिमांडो से 13 गोलाकार और अंडाकार आकार की झोपड़ियों के प्रमाण मिले हैं।
- महागारा - झोपड़ियों और पोस्ट होल (संख्या में 20) (अधिकतम) के प्रमाण मिले हैं।

कश्मीर घाटी

- नवपाषाण युग लगभग 3000 ईसा पूर्व शुरू हुआ।
- कश्मीर घाटी में नवपाषाण युग में गड्ढे में रहना और हड्डी के औजारों का उपयोग विशिष्ट विशेषता थी।
- बुर्जहोम और गुफ्कराल दो महत्वपूर्ण स्थल हैं।
- भेड़ और बकरी को पालतू बनाने के साथ-साथ गेहूं और जौ की खेती की जाती थी।
- पत्थर और हड्डी के औजारों का इस्तेमाल किया गया।
- बुर्जहोम से तांबे के सीमित उपयोग के तत्व मिले हैं।
- मृत स्वामी के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं।
- लोग विभिन्न प्रकार की ईंटों से बने घरों में रहते हैं।

पूर्वी भारत

- नवपाषाण युग की शुरुआत 2000 ईसा पूर्व के आसपास हुई थी।
- सबसे महत्वपूर्ण पक्ष चिरांद है। हड्डी के उपकरण खोजे गए हैं।

उत्तर पूर्व भारत

- लगभग 2000 ईसा पूर्व असम घाटी में नवपाषाण युग की शुरुआत हुई।
- देवजली हैडिंग और नहरकटिया सबसे महत्वपूर्ण स्थल हैं।
- पत्थर से बने दांतों के साथ कुल्हाड़ी का उपयोग असम घाटी की विशिष्ट विशेषता थी।

दक्षिण घाटी

- नवपाषाण युग लगभग 2500 ईसा पूर्व शुरू हुआ।
- कृषि गतिविधियों के साथ-साथ पशुओं का पालन-पोषण भी किया जाता था। सबसे महत्वपूर्ण जानवर मवेशी थे।
- राख के टीले से मवेशियों को पालतू बनाने के प्रमाण मिले हैं (यह मवेशियों के गोबर को जलाने का परिणाम था।)
- सबसे बड़ा राख का टीला उत्नूर (आन्ध्र प्रदेश) और कुपगल से खोजा गया था।
- गेहूं और बाजरा की खेती की जाती थी।
- धूसर पात्र और लाल पात्र बर्तन का इस्तेमाल किया गया।
- नागार्जुनकोंडा से छिछले गड्ढे के रहने के प्रमाण मिले हैं।
- संगणकल्लू से मिट्टी के बर्तनों की खोज नहीं हुई थी।

मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति

- मिट्टी के बर्तनों के सबसे पुराने साक्ष्य चोपनीमांडू में मिले थे।

- हड़प्पा के मिट्टी के बर्तन लाल बर्तन पर और लाल बर्तन पर काले रंग के थे।
- बर्तनों पर जानवरों, ज्यामितीय डिजाइन, मानव आकृतियों और पौधों को चित्रित किया गया था।
- मछली अधिकतम चित्रित ज्यामितीय डिजाइन थी।
- बर्तन पहिएदार थे।

काले और लाल रंग के बर्तन (2400 ई.पू.-100 ई.)

1. राजस्थान, यूपी, एमपी, बिहार, पश्चिम बंगाल से साक्ष्य मिले हैं।
2. बर्तनों पर कोई पेंटिंग नहीं मिली है।
3. मूल रूप से गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र से पाया जाता है।

गेरू रंग के बर्तन (2000 ईसा पूर्व -1500 ईसा पूर्व)

1. गंगा यमुना दोआब क्षेत्र से मिला।
2. लाल क़िला, बुलंदशहर से सर्वश्रेष्ठ साक्ष्य।
3. लाल किला और जोधपुर से घर के साक्ष्य मिले हैं।

कॉपर होर्ड कल्चर (2000 ई.पू.- 1500 ई.पू.)

1. उत्तर पूर्वी भाग को छोड़कर देश के लगभग हर हिस्से से पाया जाता है।
2. पहला साक्ष्य बिठूर से और अधिकतम दोआब क्षेत्र (गंगा-यमुना) से मिला है।
3. गुंगेरिया- यहाँ सबसे अधिक ताँबे की वस्तु मिली है।
4. कॉपर हुड कल्चर और ओसीपी के बीच किसी भी सीधे संपर्क का कोई सबूत नहीं है, हालांकि उनके द्वारा कब्जा किया गया क्षेत्र अतिव्यापी रहा है।

चित्रित धूसर पात्र (1000 ईसा पूर्व -600 ईसा पूर्व)

- उत्तर वैदिक युग की मिट्टी के बर्तन।
- लगभग 900 ईसा पूर्व लोहे की खोज की गई थी।
- सबसे बड़ा स्थल बुखारी है जिसकी खोज की गई है।
- हस्तिनापुर से लोहे की कोई वस्तु नहीं मिली है।
- अच्छी जगहों से ही खेती के प्रमाण मिले हैं।

    1. हस्तिनापुर और अतरंजीखेड़ा।
    2. मांडा और भगवानपुरा।

    यहां से अतिकाल हड़प्पा मिट्टी के बर्तनों के साथ पीजीडब्ल्यू मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

भगवानपुरा- अतिकाल हड़प्पा के मिट्टी के बर्तनों का सबसे बड़ा स्थल और उनके 13 कमरों के घर मिले थे।

- कौशांबी- यहाँ से प्रोटो-अर्बन चरण के प्रमाण मिले हैं।

    उत्तरी काली पॉलिश वेयर- (600 ई.पू.-300 ई.)

    इस अवधि के दौरान विभिन्न विकास हुए जैसे बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, महाजनपदों का उदय हुआ और आधुनिक राजवंशों की स्थापना हुई।
- पंच-चिह्नित सिक्के शुरू हुए लेकिन उन पर कोई शिलालेख नहीं है।
- मटके पर चमकदार पॉलिश सभी मौर्य स्तंभों से मिली है।

ऑरेंटाइन वेयर (200 ई.पू.-300 ई.)

- रोमनों से संबद्ध।
- अरिकामेडु और मुज़िरिस से मिला।
- रोमन मिट्टी के बर्तन उत्तर और दक्षिण भारत दोनों से मिले हैं। लेकिन रोमन सिक्के केवल दक्षिण भारत से मिले हैं (उत्तर भारत में उन्हें विभिन्न राजाओं द्वारा पिघलाया गया होगा जिसके कारण वे उत्तर भारत में नहीं पाए गए हैं।

लाल स्लिप्ड वेयर (कुषाण से तीसरी शताब्दी ई.)

लाल वेयर (100 ई.- प्रारंभिक मध्यकालीन भारत)

लाल रंग के बर्तन (गुप्त काल के मिट्टी के बर्तन)

सिंधु घाटी सभ्यता

- 1.5 मिलियन वर्ग किमी में फैला है।
- 1500 से अधिक स्थानें
- 15 लाख वर्ग किलोमीटर में फैली इस सभ्यता के 1500 से अधिक स्थलों की खोज की गई है। और 1.8 मिलियन वर्ग किमी का प्रभाव है। उत्तर में मांडा (जम्मू), दक्षिण में दैमाबाद (गुजरात), पश्चिम में सुतकंगेंडोर (बलूचिस्तान) और पूर्व में यूपी में आलमगीरपुर जैसी सीमाओं के साथ।
- सभ्यता के व्यापक प्रसार और लिपि की व्याख्या न होने के कारण इसकी उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांत सामने आए हैं।

1. विदेशी मूल सिद्धांत।

द्वारा दिए गए-

1. जॉन मार्शल
2. मोर्टिमर व्हीलर
3. गॉर्डन चाइल्ड

उनके अनुसार, यह सभ्यता अचानक शुरू हुई और बहुत ही कम समय में अपने चरम पर पहुंच गई। इस प्रकार, उनके अनुसार, मेसोपोटामिया के लोग सिंधु घाटी में आए और वहां शहरीकरण शुरू किया।

अपने सिद्धांत को सही ठहराने के लिए उन्होंने दोनों सभ्यताओं के बीच कई समानताएं दी हैं जैसे-

i. दोनों सभ्यताएं शहरी थीं।
ii. दोनों चित्रात्मक लिपि का उपयोग करते हैं।
iii. दोनों सील का उपयोग करते हैं।
iv. दोनों ने व्हील टर्न पॉटरी का इस्तेमाल किया।
v. दोनों कांस्य का उपयोग करते हैं।
vi. दोनों ने जली हुई ईंटों का इस्तेमाल किया।

लेकिन गहन विश्लेषण दोनों के बीच विभिन्न अंतरों को सामने लाता है।

विशेषताएं	**मेसोपोटामिया सभ्यता**	**सिंधु घाटी सभ्यता**
चित्रात्मक लिपि	900 लक्षण मिले हैं	396 लक्षण मिले
मुहरें	बेलनाकार और मिट्टी से बना	मुहरें वर्गाकार और आयताकार थीं और स्टीटाइट से बनी थीं।
पीतल	कम इस्तेमाल किया गया	अधिक उपयोग किया गया
जली हुई ईंटें	मानकीकृत-नहीं	1:2:4 के अनुपात में मानकीकृत ईंटें